Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **मोहनजोदड़ो का नगर नियोजन एवं विशाल स्नानगृह।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

मोहनजोदड़ो का नगर नियोजन एवं विशाल स्नानगृह।

नगर नियोजन ।

मोहनजोदड़ो की सभ्यता के अवशेष पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लड़काना जिले में सिंधु नदी के दाहिने किनारे पर प्राप्त हुआ है । यह नगर करीब 5 किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है मोहनजोदड़ो के टीलों को 1922 ईसवी में खोजने का श्रेय राखलदास बनर्जी को प्राप्त हुआ।

मोहन जोदड़ो की इमारतें भले ही खंडहरों में बदल चुकी हों परंतु शहर की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिये ये खंडहर काफ़ी हैं। यहाँ की सड़कें ग्रिड योजना की तरह हैं मतलब आड़ी-सीधी हैं।पूरब की बस्तियाँ “रईसों की बस्ती” हैं, क्योंकि यहाँ बड़े-घर, चौड़ी-सड़कें, और बहुत सारे कुएँ हैं। मोहन जोदड़ो की सड़कें इतनी बड़ी एवं चौड़ी हैं, कि यहाँ आसानी से दो बैलगाड़ी निकल सकती हैं। यहाँ सड़क के दोनों ओर घर हैं,

दिलचस्प बात यह है, कि यहाँ सड़क की ओर केवल सभी घरो की पीठ दिखाई देती है, मतलब दरवाज़े अंदर गलियों में खुलते हैं। वास्तव में स्वास्थ्य के प्रति मोहन जोदड़ो का शहर प्रशंसा का पात्र है, कयोंकि यहाँ की जो नगर नियोजन व्यव्स्था है काफी सुव्यवस्थित है। इतिहासकारों का कहना है कि मोहन जोदड़ो सिंघु घाटी सभ्यता में पहली संस्कृति है जो कि कुएँ खोद कर भू-जल तक पहुँची। मुअनजो-दड़ो में करीब 700 कुएँ थे। यहाँ की बेजोड़ पानी-निकासी, कुएँ, कुंड, और नदीयों को देखकर हम यह कह सकते हैं कि मोहन जोदड़ो सभ्यता असल मायने में जल-संस्कृति थी।

विशाल स्नानगृह ।

मोहन जोदड़ो की दैव-मार्ग (डिविनिटि स्ट्रीट) नामक गली में करीब 40 फ़ुट लम्बा और 25 फ़ुट चौड़ा प्रसिद्ध जल कुंड है, जिसकी गहराई 7 फ़ुट है। कुंड में उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। कुंड के तीन तरफ़ बौद्धों के कक्ष बने हुए हैं। इसके उत्तर में 8 स्नानघर हैं। इस कुंड को काफ़ी समझदारी से बनाया गया है, क्योंकि इसमें किसी

का द्वार दूसरे के सामने नहीं खुलता। यहाँ की ईंटें इतनी पक्की हैं, जिसका कोई जवाब ही नहीं। कुंड में बाहर का अशुद्ध पानी ना आए इसके लिए कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोडी के गारे का इस्तेमाल हुआ है। दीवारों में डामर का प्रयोग किया गया है। कुंड में पानी की व्यवस्था के लिये दोहरे घेरे वाला कुआँ बनाया गया है। कुंड से पानी बाहर निकालने के लिए पक्की ईंटों की नालियाँ भी बनाई गयी हैं, और खास बात यह है कि इसे पक्की ईंटों से ढका गया है। इससे यह प्रमाणित होता है कि यहाँ के लोग इतने प्राचीन होने के बावजूद भी हमसे कम नहीं थे। कुल मिलाकर सिंधु घाटी की पहचान वहाँ की पक्की-घूमर ईंटों और ढकी हुई नालियों से है, और यहाँ के पानी की निकासी का ऐसा सुव्यवस्थित बंदोबस्त था जो इससे पहले के लिखित इतिहास में नहीं मिलता।समय के साथ मोहन जोदड़ो के शहरियों ने महास्नानघर को प्रयोग करना बंद कर दिया। वह रेत और मिटटी से भर गया और पूरी तरह दफ़न होकर नज़रों से ओझल हो गया।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मोहनजोदड़ो की

नगर व्यवस्था यह अवश्य सिद्ध करती है कि यहां श्रेष्ठ नगरपालिका शासन की व्यवस्था होगी।

References: Internet & Competitive books.